P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

भीष्म साहनी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शारदा शर्मा
अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
के०बी० महिला महाविद्यालय,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग,झारखण्ड

सारांश

हिन्दी के कथाकारों में भीष्म साहनी एक सशक्त कलाकार हैं जो नयी कहानी के उन कथाकारों में से हैं जिन्होंने गुलाम भारत के दर्द को न केवल देखा है, वरन् महसूस भी किया है। जब कभी आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों की चर्चा होती है वहाँ प्रख्यात साहित्यकार भीष्म साहनी का नाम बड़े गर्व एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले लेखक के रूप में भीष्म साहनी को ही रखा जाता है।

मुख्य शब्द : आधुनिक, मानवतावादी, साक्षात्कार, संवेदना

प्रस्तावना

भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 में रावलपिंडी में हुआ, इनके पिता अपने समय के प्रसिद्ध समाजसेवी थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हिंदी एवं संस्कृत में हुई। तत्पश्चात इन्होंने स्कूल से उर्दू एवं अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की। 1937 में इन्होंने लाहौर गवर्नमेंट कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० किया। 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पी०एच०–डी० की उपाधि प्राप्त की। भीष्म साहनी थिएटर की दुनिया से भी जुड़े रहे, सन् 1940 के आस–पास अपने बड़े भाई बलराज साहनी के साथ इंडियन पीपुल्स ऐसोसिएशन (इप्टा) में काम किया। 1950 ई० में साहनी जी ने दिल्ली कॉलेज में अंग्रेजी में व्याख्याता के रूप में अपनी सेवाऐं दी। मास्को में 1957 से 1963 तक इन्होंने हिन्दी भाषा के प्रोत्साहन के साथ रूसी भाषा से साहित्यिक अनुवाद भी किया जिसकी संख्या लगभग पच्चीस पुस्तकों की है। हिंदी अंग्रेजी के साथ ही भीष्म साहनी उर्दू, संस्कृत, रूसी और पंजाबी भाषाओं के अच्छे जानकार थे। साहित्यकार भीष्म साहनी स्वाधीनता आंदोलन से भी जुड़े रहे। 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में इन्हें जेल भी जाना पड़ा।

भीष्म साहनी जी को यथार्थवादी एवं प्रगतिशील कथाकार माना जाता है। जहाँ तक प्रगतिशील आन्दोलन और भीष्म साहनी के कथा–साहित्य का प्रश्न है तो इसे काल की सीमा में बाँधना उचित नहीं है। हिन्दी लेखन में समाजोन्मुखता की लहर बहुत पहले नवजागरण काल से ही उठने लगी थी। मार्क्सवाद ने उसमें केवल एक और आयाम जोड़ा था। इसी मार्क्सवादी चिन्तन को मानवतावादी दृष्टिकोण से जोड़कर उसे जन–जन तक पहुँचाने वालों में प्रमुख नाम भीष्म साहनी का है। स्वातंत्र्योत्तर लेखकों की भाँति भीष्म साहनी सहज मानवीय अनुभूतियाँ और तत्कालीन जीवन के अर्न्तद्वन्द्व को लेकर सामने आये और उसे अपनी रचना का केन्द्रीय विषय बनाया। जनवादी चेतना के लेखक भीष्म साहनी जी की लेखकीय संवेदना का आधार जनता की पीड़ा है। जनसामान्य की पीड़ा को अपनी पीड़ा बनाकार अपने लेखन को यथार्थ की ठोस जमीन पर अवलम्बित की है।

भीष्म साहनी जी एक ऐसे साहित्यकार थे जो बात को मात्र कह देना ही नहीं बल्कि बात की सच्चाई और गहराई नाप लेना भी उतना ही जरूरी समझते थे। अपनी साहित्य के माध्यम से सामाजिक विषमता एवं संघर्ष के बंधनों को तोड़कर आगे बढ़ने का आवाह्न करते थे। उनके साहित्य में सर्वत्र मानवीय करुणा, मानवीय मूल्य एवं नैतिकता विद्यमान है। भीष्म जी की पहली कहानी 'अबला' इंटर कॉलेज की पत्रिका 'रावी' में तथा दूसरी 'नीली आँखें' हिन्दी साहित्य की प्रमुख पत्रिका 'हंस' में छपी।इनकी अन्य रचनाएँ – 'झरोखे, कड़ियों, तमस, बसन्ती, मयादास की माड़ी, कुत्तों, नीलू, नीलिमा नीलोफर नामक उपन्यासों के अतिरिक्त भाग्यरेखा, पटरियाँ, पहला पाठ, भटकती राख, वाडयू, गोला यात्रा, निशाचर, चीफ की दावत, प्रतिनिधि कहानियां एवं मेरी प्रिय कहानियां हैं। नाटक विधा पर भी इनकी लेखनी खूब चली है– हानूष, कबिरा खड़ा बाजार में, माधवी मुआवजे, जैसे प्रसिद्ध नाटक भीष्म जी ने लिखे हैं। जीवनी साहित्य के अन्तर्गत इन्होंने मेरे भाई बलराज, अपनी बात मेरे साक्षात्कार

तथा बाल साहित्य के अन्तर्गत 'वापसी गुलेल' का खेल का सृजन कर साहित्य की हर विधा पर अपनी कलम चलायी है। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले साहनी जी ने 'आज के अतीत' नामक आत्मकथा का प्रकाशन करवाया। सन् 11 जुलाई सन् 2003 को ये पंचतत्त्व में विलीन हो गए।

स्वतंत्र व्यक्तित्व के स्वामी भीष्म साहनी जी गहन मानवीय संवेदना के सशक्त हस्ताक्षर थे जिन्होंने भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक यथार्थ का स्पष्ट चित्र अपने उपन्यास में खींचा है। इनकी यथार्थवादी दृष्टि इनके प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचारों का प्रतिफल थी।

भीष्म जी की सबसे बड़ी विशेषता थी कि इन्होंने जैसा जीवन जिया, जिन संघर्षों को झेला, उसके यथावत चित्र अपनी रचनाओं में अंकित कर दिया। इसी कारण इनके लिए रचना कर्म और जीवन धर्म में अभेद था। वे लेखन की सच्चाई को अपनी सच्चाई मानते थे।

भीष्म जी पर कथाकार यशपाल एवं प्रेमचंद जी की गहरी छाप है। अपनी कहानियों में भीष्म जी ने जीवन के द्वन्द्व, विसंगतियों में जकड़े मध्यवर्ग की दबी इच्छा को बहुत ही बेबाकी से उद्घाटित किया है। जनवादी कथा आन्दोलन के समय भीष्म साहनी जी ने जन सामान्य की आशा आकांक्षा, इच्छा, दुःख पीड़ा अभाव संघर्ष तथा विडम्बनाओं को अपने कहानियों एवं उपन्यासों में केन्द्र बनाये हुए हैं। नयी कहानी में भीष्म जी ने कथा–साहित्य की जड़ता एवं पुरानी परम्परा को तोड़कर उसे ठोस सामाजिक आधार दिया। स्वयं का भोगा हुआ विभाजन के दर्द को भीष्म जी ने अपने उपन्यास 'तमस' में खोलकर रख दिया हे। जहाँ तक नारी मुक्ति समस्या का प्रश्न है तो इन्होंने अपनी रचनाओं में नारी के व्यक्तित्व विकास, स्वतंत्रता का अधिकार, आर्थिक संबलता, स्त्री शिक्षा तथा सामाजिक सम्मान का प्रबल समर्थन किया है। इस तरह से देखा जाये तो साहनी जी प्रेमचंद के पदचिन्हों पर चलते हुए उनसे भी कहीं आगे निकल गए है।भीष्म जी की रचनाओं से सामाजिक अन्तर्विरोध पूरी तरह उभर कर आया है। इनके साहित्य में राजनीतिक मतवाद दलीय या क्षेत्रीयता इत्यादि आरोप नहीं है बल्कि राजनीतिक में निरन्तर बढ़ते भ्रष्टाचार, नेताओं की पाखंडी प्रवृति, चुनावों की भ्रष्ट प्रणाली, राजनीति में धार्मिक भावना, साम्प्रदायिकता, जातिवाद का दुरुपयोग, भाई–भतीजावाद, नैतिक मूल्यों का ह्रास आदि को बहुत ही ईमानदारी से दर्शाया है। इनकी रचनाओं में व्यापक स्तर पर आचरण भ्रष्टता, शोषण की षड्यंत्रकारी प्रवृतियाँ एवं राजनैतिक आदर्शों के खोखलेपन आदि का चित्रण भीष्मजी ने बहुत ही प्रामाणिकता एवं तटस्थता के साथ किया है। इनका सामाजिक बोध व्यक्तिगत स्तर पर आधारित था। साहनी जी के उपन्यासों में शोषणहीन, समतामूलक, प्रगतिशील समाज की रचना, पारिवारिक स्तर पर रूढ़ियों का विरोध तथा संयुक्त परिवार की पारस्परिक विघटन की स्थितियों के प्रति भी असंतोष व्यक्त हुआ है। इनका सांस्कृतिक दृष्टिकोण एकदम वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक है, जो निरन्तर परिष्करण, परिशोधन एवं परिवर्धन की प्रक्रिया से गुजरता रहा है। इनके प्रगतिशील दृष्टि के कारण वह मूल्यों पर आधारित ऐसी धर्म–भावना के पक्षधर है जो मानव मात्र के कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध है।

भीष्म साहनी जी के साहित्य में जहाँ एक ओर सहृदयता एवं सहानुभूति है वही दूसरी ओर जातीय तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान की आग भी है। वे पूँजीवादी, आधुनिकता बोध और यथार्थवादी विचारधारा के अन्तर्विरोधी को खोलते चलते है। निम्न मध्य वर्ग के समर्थ रचनाकार भीष्म जी भारतीय समाज के आधुनिकीकरण के फलस्वरूप विश्व साम्राज्यवाद और देशी पूँजीवाद में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हैं। वे मध्ययुगीन सामन्ती व्यवस्था से समझौता करके पूँजीवाद के द्वारा अपनी बुर्जुआ संस्कृति से लोकप्रिय हुई निम्न कोटि के बुर्जुआ संस्कारों को चित्रित कर प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाया है। साहनी जी अपनी रचनाओं में एक ओर आधुनिकता बोध की विसंगतियों और ढोंग के विरुद्ध लड़ते हैं तो दूसरी ओर रूढ़ियों अंधविश्वासों वाली धार्मिक कुरीतियों पर प्रहार करते हैं। अगर स्त्री–पुरुष संबंध की बात की जाए तो भीष्म जी भारतीय गृहस्थ जीवन में स्त्री–पुरुष के जीवन को रथ के दो पहियों के रूप में स्वीकार करते हैं। विकास और सुखी जीवन के दोनों के बीच आदर्श संतुलन और सामंजस्य का बना रहना अनिवार्य है। उनकी रचनाओं में सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने वाले आदर्श दम्पतियों को बड़ी गरिमा के साथ रेखांकित किया है। भीष्म जी का विश्वास था कि स्त्रियों के लिए समुचित शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता एवं व्यक्तिगत विकास की सुविधा आदर्श समाज की रचना के लिए नितांत आवश्यक है। वे स्त्रियों के व्यक्तित्व के विकास के पक्षपाती थे, जोअवसर पाकर अपना चरम विकास कर सकती है। भीष्म जी परम्परा से चली आ रही विवाह की जड़ परम्परा को स्वीकार न करके भावनात्मक एकता और रागात्मक अनुबंधों को विवाह का प्रमुख आधार मानते थे।

मानवीय मूल्यों पर आधारित भीष्म जी का धर्म–भावना इंसान को इंसान से जोड़ती है न कि उन्हें पृथक करती है। उनके उपन्यासों में शोषणविहीन समतामूलक प्रगतिशील समाज की स्थापना के साथ समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों के त्रासद परिणाम धर्म की विद्रुपता एवं खोखलेपन को उद्घाटित किया गया है। इसका साक्षात् उदाहरण 'तमस' में साफ दीखता है। मार्क्सवाद से प्रभावित होने के कारण भीष्म जी समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों के त्रासद परिणामों को बड़ी गंभीरता से अनुभव करते थे। पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत वह जन सामान्य के बहुआयामी शोषण को सामाजिक विकास में सर्वाधिक बाधक और अमानवीय मानते थे। बसंती, झरोखें, तमस, कड़ियाँ आदि उपन्यासों में उन्होंने आर्थिक विषमता और उसके दुखद परिणामों को बड़ी मार्मिकता से उद्घाटित किया है जो समाज के स्वार्थी कुचक्र का परिणाम है और इन दुखद स्थितियों के लिए दोषपूर्ण समाज व्यवस्था उत्तरदायी है।

भीष्म जी एक शिल्पी के रूप में भी सिद्धहस्त कलाकार थे। कथ्य और वस्तु के प्रति यदि उनमें सजगता और तत्परता का भाव था तो शिल्प सौष्ठव के प्रति भी वह निरन्तर सावधान रहते थे। भीष्म जी प्रेमचंद के समान जीवन की विसंगतियों और विडम्बनाओं को अपनी रचनाओं में

अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं, भले ही वे प्रेमचंद की भाँति ग्रामीण वस्तु को नहीं पकड़ पाये किन्तु परिवेश की समग्रता में वस्तु और पात्र के अन्तः संबंधों को जिस प्रकार खोलते हैं और इन संबंधों में जनता के मुक्तकामी संघर्षों को रूपायित करते हैं वह निश्चित रूप से उन्हें न केवल प्रेमचन्द के निकट पहुँचाता है अपितु उसमें नया भीष्म भी जुड़ पाता है। अपनी रचनाओं में साहनी जी ने अपने जीवन के कटुतम यथार्थों का प्रामाणिक चित्रण किया है वही जन सामान्य का मंगल विधान करने वाले लोको पकारक आदर्शों को भी रेखांकित किया है। अपने इन्हीं कालजयी रचनाओं के कारण ये हिन्दी साहित्य में युगान्तकारी उपन्यासकार के रूप में चिरस्मरणीय रहेगें।

संदर्भ सूची

1. साहित्यिक निबंध – ले० डॉ० भारती खुबालकर, पृ० 94
2. अमरकांत – भीष्म साहनी – रचना और व्यक्तित्व
3. राजेश्वर दयाल सक्सेना – सृजनशील यथार्थ
4. शृंखला – जुलाई 2013
5. तमस उपन्यास की मानवीय–त्रासदी – अलका श्रीवास्तव, पृ० 47
6. प्रगतिशील साहित्यकार : भीष्म साहनी – डॉ० मुद्रिका सिंह